कुल पृष्ठ संख्या–28 (कवर पेज सहित)   क्रम संख्या 00032

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा

B.S.E.R. K

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिए)

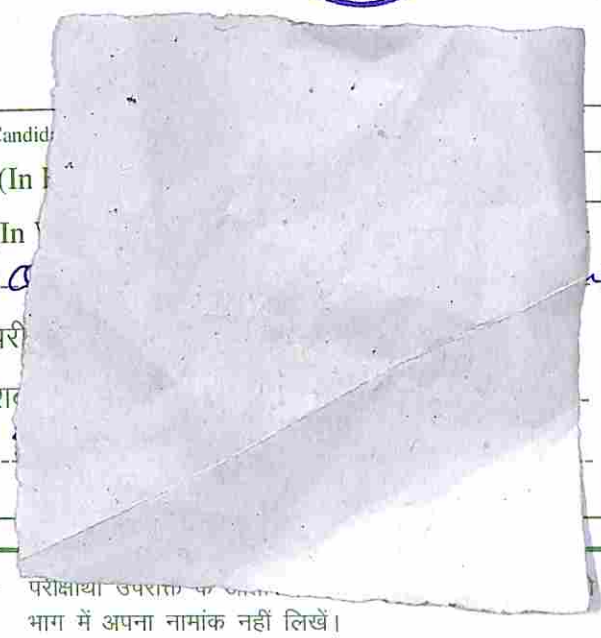

Candid...
(In F...
(In W...
परी...
श...

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के ... भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय ...... Sanskrit Sahitya.

परीक्षा का दिन ...... शुक्रवार

दिनांक ...... 22-04-2022.

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	12	19	03
2	05	20	03
3	12	21	04
4	02	22	04
5	02	23	04
6	02	24	
7	02	25	
8	02	26	
9	02	27	
10	02	28	
11	02	29	
12	02	30	
13	02	31	
14	02	योग	79
15	02	प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16	02	अंकों में	शब्दों में
17	03	79	उन्यासी
18	03		

परीक्षक के हस्ताक्षर ...... संकेतांक 0 0 0 30 16

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 166/2019

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ भी न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न – पत्र हिन्दी – अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		खण्ड 'अ'
1	Q1. (i)	(क) दृष्टान्ते ✓
1	(ii)	(ग) दीपकालङ्कारस्य ✓
1	(iii)	(स) पाञ्चालिकी ✓
1	(iv)	(द) रौद्रस्य ✓
1	(v)	(ग) त्र्यस्त्रिंशत् ✓
1	(vi)	(ग) धर्मम् ✓
1	(vii)	(ग) द्वौ ✓
1	(viii)	(स) तुल्यप्राधान्यम् ✓
1	(ix)	(द) लक्षणा ✓
1	(x)	(स) यक्ष ✓
1	(xi)	(ख) विप्रलम्भशृङ्गारः ✓
1	(xii)	(स) तिस्रः ✓

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	Q2.	
1	(i)	प्रतिवस्तूपमा
1	(ii)	स्नरला
1	(iii)	दण्डी
1	(iv)	कुसुमसदृशं
1	(v)	पुरुष:
0	(vi)	
	Q3.	
1	(i)	'यायातुः सौम्यता सेयं सुधांशोरकलङ्कता।' इत्यत्र निदर्शना लङ्कारो वर्तते।
1	(ii)	'नमन्तमपि धीमन्तं न लंघयन्ति कश्चन' इत्यत्र विशेषोक्तिः लङ्कारो विद्यते।
1	(iii)	शृङ्गाररसः द्विविधः।
1	(iv)	करुणरसस्य स्थायिभावः शोकः।

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	(v)	अद्भुतरसे स्थायिभाव: विस्मय: भवति।
1	(vi)	अर्थशक्त्युद्भवध्वने: चत्वार: भेदा: भवन्ति।
1	(vii)	रसभावतथाभास प्रमुख एक: एव स्थायिभाव भेदोभवति
1	(viii)	'कुंकुमाक्तं स्तनद्वन्द्वं मानसं मम गाहते' इत्यत्र अस्फुटं गुणीभूतव्यङ्ग्यम्।
1	(ix)	यत्र वाच्यार्थपेक्षया व्यङ्ग्यार्थोऽधिकचमत्कारयुक्तो न भवति तत्र गुणीभूतव्यङ्ग्यम् काव्यं भवति।
1	(x)	यक्ष: रामगिरिआश्रमे आश्रमे वसतिं चक्रे।
1	(xi)	अधिगुणे याञ्चा अमोघा भवति।
1	(xii)	प्रतिमानाटकस्य रचयिता महाकविभास: विद्यते।
		(खण्ड - ब)
2	4.	हासस्थायि रसो हास्यो विभावाद्यैर्यथाक्रमम् वैरूप्यफुल्लगण्ड-वाक्हित्याद्यै: समन्वित।
2	5.	स्थायि जुगुप्सा बीभत्सो विभावाद्यैर्यथाक्रमम्: अनिष्टेक्षणनिष्ठिवमोहाद्या: सम्मता क्रमात्।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	6.	भवेद्‌र्थान्तरन्यासोऽनुक्तार्थान्तराभिधा: हनुमानब्धिमतरद्दुष्करं किं महात्मनाम्।
2	7.	अर्थशक्तिसमुद्भवस्य ध्वने चत्वारः भेदाः अस्ति।

अर्थशक्तिसमुद्भवस्य

- वस्तुना अलङ्कारेण
  - कवि कल्पित वक्तृप्रौढोक्तिसिद्धः
  - कवि प्रौढोक्तिसिद्धः
  - स्वयंसिद्धः
- अलङ्कारेण वस्तु
  - कवि कल्पितवक्तृप्रौढोक्तिसिद्धः
  - कवि प्रौढोक्तिसिद्धः
  - स्वयंसिद्धः
- वस्तुना वस्तु
  - कविकल्पित वक्तृप्रौढोक्तिसिद्धः
  - कवि प्रौढोक्तिसिद्धः
  - स्वयंसिद्धः
- अलङ्कारेण अलङ्कार
  - कवि कल्पित वक्तृप्रौढोक्तिसिद्धः
  - कवि प्रौढोक्तिसिद्धः
  - स्वयंसिद्धः

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	8.	अगूढ गुणीभूतव्यङ्ग्यं - अगूढं कलयेद्धन्यान्तरस्य सङ्क्रमितादिकम्। विस्मृतः किमपानाधा, सः तया कुम्भसम्भवः।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	9.	प्रयोजनभेदेन लक्षणा द्विविधा – स्फुट प्रयोजन (अग्निर्माणवकः) अस्फुट प्रयोजन (पटोऽयं दग्धः)
2	10.	मीलनाऽमीलनलक्षणायाः भेदत्रयस्य नामानि सन्ति – सिद्धः = उद्देश्यपदनिष्ठा सिद्धः। साध्यः = विधेयपदनिष्ठा साध्यः। साध्यङ्गः = विधेयत्वाय पदनिष्ठा साध्यङ्गः।
1	11.	अभिधाः षड्विधां सन्ति – उदाहरणम् जात्यावाचक – गौः गुणवाचक – नीलः क्रियावाचक – पाचकः वस्तुयोगवाचक – दण्डी संज्ञावाचक – डित्थः निर्देशेन वाचक – कंसः
2	12.	~~कुबेरस्य सेवकः अन्तराक्ष्य को~~ यक्षः कथयति यत् मेघ! भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां प्रयोमीराणां वंशोत्पन्नं, इच्छाधीनविग्रहं, इन्द्रस्य मुख्यचरं त्वामहं जानामि। अतः दुर्भाग्यवशात् विमुक्तभार्यकोऽहं यक्षः याचकत्वनोगतोऽस्मि यतोहि ~~त्वामङ्काप~~ अधिगुणेषु नरे निष्फलापि प्राय ~~सफलाया~~ प्रार्थना सफला ~~उत्तम~~ भवति। किन्तु, निम्नगुणवति निर्गुणे वा नरे सफलाया प्रार्थना इयदापि उत्तम न भवति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	16.	महाकवि भासस्य नाटकानां नामानि सन्ति।
		(i) अभिषेकनाटकम्
		(ii) प्रतिमानाटकम्
		(iii) पञ्चरात्रम्
		(iv) उरुभङ्गम्
		(v) दूतवाक्यम्
		(vi) दूतघटोत्कचकम्
		(vii) बालचरितम्
		(viii) मध्यमव्यायोगः
		(ix) स्वप्नवासवदत्तम्
		(x) चारुदत्तम्
		(xi) प्रतिज्ञायौगन्धरायणः
		(xii) कर्णभारकम्
		(xiii) अविमारकम्
2	14.	यक्षः मेघं कथयति यत् त्वम् पर्वतः मार्गे यास्यसि। शीतलं नर्मदा नद्याः जलं निर्वाह पिबसि। अन्तः सारः रिक्त भवति सः पूर्णता गौरवान् गौरवान् भवति।
2	15.	दशार्णदेशे मेघस्य प्रभावात् राजधानी विदिशाः नगरे नीचैपर्वत सम्पर्कात् नीचैनामकं पर्वत आसीत्। तस्य नीचैगिरिः वेश्या मैथुनोत्पन्नः त्वम् वासं कुरु।

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

'खण्ड - द'

21. सीतायाः चारित्रचित्रणं अस्ति।

सीतायाः महाकविभासकृतप्रतिमानाटकस्य नायिका अस्ति। सा धर्म भूमौ मिथिल नरेशस्य जनकस्य पुत्री अस्ति। सा कोमलतायाः, उदारतायाः, धीरतायाः गम्भीरतायाः, संमामितायाः, शीललतायाः, संवेदशीलतायाः च प्रतिमुर्तिऽस्ति। सा पतिपरित्याज्यास्त्री अस्ति। सा रामेण वनवासं सह वल्कलवस्त्रः धारयं गच्छति। सा पतिभक्तः स्त्री अस्ति। महाकविभासः सीतायाः प्रतिमानाटके गुणवतिस्त्री रूपेण स्थापित अस्ति।

4

22. तस्य स्थित्वा कथमपि _ _ _ _
_ _ _ _ _ _ _ _ किं पुनर्दूरसंस्थे

सन्दर्भः प्रस्तुतोऽयं श्लोकः महाकवि कालिदासविरचित 'मेघदूतं' नामकं खण्डकाव्यात उद्धृतोऽस्ति।

4

प्रसङ्गः अस्मिन् श्लोके यक्षः मेघं दृष्ट्वा विचारयामासः।

अन्वयः तस्य राजराजस्य अनुचरः स्थित्वा कथमपि पुरः कौतुकाधानहेतो रन्तर्बाष्पश्च मेघालोके सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेतः भवति,

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कण्ठा श्लेष प्रणयिनिजने पुनः दूर संस्थे किं।

पदच्छेदः- तस्य स्थित्वा कथम् अपि पुरः
कौतुकाधानहेतो रन्तः वाष्पाश्चिरमनुचरो
राजराजस्य दध्यौ। मेघालोके भवति सुखिनो-
अप्यन्यथावृत्ति चेतः; कण्ठाश्लेषप्रणयिनिजने
किं पुनः दूरसंस्थे।

भावार्थः- कुबेरस्य सेवकः अन्तरश्रु कौतुकोत्पादनानि
पयोदः सम्मुखे केनापि प्रकारेण उपस्थाप्य
बहु कालं विचारयामास:। पयोददर्शने विरहजन्यदु
खरहितस्यापि हृदयं विकार वृत्ति स्यात्। कण्ठालिंगनं
व्यतौ अपरतः स्थित पुनः काश्चित्।

व्याख्याः- तस्य = मेघस्य, स्थित्वा = अभात्वा, कथमपि -
किमपि; कौतुकाधानहेतो = मेघः,
रन्त वाष्पाश्चिरमनुचरो राजराजस्य = रन्तर्वाष्पाश्च
यक्षः, मेघालोके = मेघ कौतुकोपायनं, भवति = अस्ति
सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति = विकारवृत्ति, चेतः - हृदयं
कण्ठाश्लेष = कण्ठालिंगनं, किं = कथम्, पुनः = पुनः
दूरसंस्थे = स्थिते।

व्याकरण- कथमपि = कथम् अपि
पुनर्दूरसंस्थे = पुनः दूरसंस्थे।
तस्य = तत् शब्दरूप षष्ठी एकवचन
किं = काश्चित्।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

छन्दः = अत्र मन्दाक्रान्ता छन्दः अस्ति।
लक्षणम् = मन्दाक्रान्ता: जलधि षड्गैम्भौ: नतौ ताद्‌गुरु चेत्।

23. (क) नागेन्द्रायवसाभिलाषविमुखाः — — — — — — — — — — — — पश्यन्त्यमी।

छन्दः नामः = अस्मिन् श्लोके शार्दूलविक्रीडितम् छन्दः वर्तते।
वर्णाः = 19 वर्णाः सन्ति।

लक्षणम् = "सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्"।

गणनिर्देशः =

S S S I I S I S I I I S S S I S S I S
नागेन्द्रायवसाभिलाषविमुखाः सास्रेक्षणा वाजिनो,

हेषाशून्यमुखाः सवृद्धवनिताबालाश्च पौरजनाः।

त्यक्ताहारकथाः सुदीनवदनाः क्रन्दन्त उच्चैर्दिशा,

रामो यातियया सदारसहजस्तामेव पश्यन्त्यमी।

4

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(खण्ड-स)

17. (ख) तस्मिन्नद्रौ - - - - - - - - - - - - - - - प्रेक्षणीयं ददर्श।

सन्दर्भ= प्रस्तुतोऽयं श्लोकः महाकवि कालिदासः विरचित 'मेघदूतं' खण्डकाव्यात् उद्धृतोऽस्ति।

प्रसङ्ग= अस्मिन् श्लोके कवि: यक्षं कान्ताविरहेण यक्ष स्थितिं कथयति।

व्याख्या= तस्मिन् अद्रौ, कतिचिदबला = स्त्री, विप्रयुक्तः = वियोगः, सः = यक्षः, कामी कामरूपी, नीत्वामासान् कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः = कनकवलय, आषाढस्य प्रथमदिवसे = आषाढस्य प्रथमदिनस्य, मेघमाश्लिष्टसानुं = कौतुकाधान वप्रक्रीडापरिणतगज = हस्तिः, प्रेक्षणीयं ददर्श= पश्य।

भावार्थ= कवि यक्षः कान्ताविरहेण स्थितिं वर्णयति तदा आषाढस्य प्रथमदिने यक्षः मेघं दृष्टवा सः पत्नीवियोग, कामरूप, नीत्वामासान् कनकवलय भ्रंश भुज भाग, रिक्त प्रकोष्ठः सः आकाशं मेघं दृष्टवा गज वप्रक्रीडा प्रेक्षणीयं।

व्याकरण= विप्रयुक्तः = वियोगः
सः = यक्षः
अबला= स्त्री योषित् अबला योषा इत्यमरः।

3

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

छन्द = अत्र मन्दाक्रान्ता छन्दः वर्तते।
लक्षणम् = मन्दाक्रान्ता : जलधिषडगैम्भौ नतौ ताद् गुरु चेत्।

(क) विभावना - विशेषोक्तिः।
18. विभावना =
"विभावना विनापिस्यात् कारणं कार्यजन्मचेत्,
पश्यलाक्षार सासिक्तं रक्तं त्वच्चणद्वयम्।

विशेषोक्तिः =
"विशेषोक्तिर्नुत्पत्ति कार्यस्य सति कारणे,
नमन्तमपि धीमन्तं न लंघयन्ति कश्चन।

(ग) विनोक्तिः - समासोक्तिः।
विनोक्तिः =
"विनोक्तिश्चेद्विना किंचित् प्रस्तुतं हिनमुच्यते,
विद्या ह्यापि सावद्या विना विनय सम्पदनं।

3

समासोक्तिः =
"समासोक्तिः परिस्फूर्ति प्रस्तुते प्रस्तुतस्य चेत्।
अयमेन्द्रीमुखं पश्य रक्तश्चुम्बति चन्द्रमा।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

19. अनुचरति शशाङ्कं राहुदोषेऽपि तारा,

— — — — भर्तृनाथा हि नार्यः॥

सन्दर्भः = प्रस्तुतोऽयं श्लोकः महाकविभासरचित 'प्रतिमानाटकं' नाटकं द्वितीये अङ्के उद्धृतोऽस्ति।

प्रसङ्गः = अस्मिन् श्लोके लक्ष्मणः माता सीता रामेण सह आगत्य प्रतिपादितम्।

व्याख्या = अनुचरति = गच्छति, शशाङ्कं = चन्द्रमां, राहुदोषेऽपि = राहुदोषे ऽपि, तारा = नक्षत्रा पतति च वन वृक्षे = तरुः, भूमिं = धरां, लता च त्यजति = अभिमान, न - नास्ति, करेणुः, पङ्कलग्नं गजेन्द्रं = हस्तिः, व्रज तु चरत्, धर्मं भर्तृनाथा = स्वामि हि = एव, नार्यः = स्त्री।

3

भावार्थः = लक्ष्मणः कथयति यत् राहु ग्रसित दशायां अपि तारा चन्द्रमा अनुगच्छति। वृक्षः पतति सः भूमि लता पतति। हस्तिः पि गच्छति हस्तिनी कदापि न त्यजति। यतो हि स्त्रीधर्मं चरत् ना स्वामि हि नार्यः अपि गच्छति।

व्याकरण = राहुदोषेऽपि = राहुदोषे अपि

भूमिं = धरा

नार्यः = स्त्रीः

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

छन्दः = अत्र मालिनी छन्दः अस्ति।
लक्षणम् = ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।

20. छत्रं सव्यजनं — — — — —
वसिष्ठः स्थितः।

सन्दर्भः = प्रस्तुतोऽयं श्लोकः ~~महाकविकालिदासविरचित मेघदूत~~ महाकविभासरचितं 'प्रतिमानाटकं' नाटकम् प्रथमे अंके उद्धृतोऽस्ति।

प्रसङ्गः = अस्मिन् श्लोके सूत्रधार रामः अभिषेकः स्थितिं वर्णित अस्ति।

~~व्याख्या~~

3

पदच्छेदः = छत्रं सव्यजनं सनान्दिपट्टं भद्रासनं कल्पितम् न्यस्ता हेममयाः सदर्भकुसुमाः तीर्थाम्बुपूर्णाः घटाः। युक्तः पुष्यरथ च मन्त्रिसहिताः पौराः समभ्यागताः सर्वस्य अस्य हि मङ्गलं स भगवान् वेद्यां वसिष्ठः स्थितः।

व्याख्या = छत्रं = छत्रं; सव्यजनं = सर्वानाम्, सनान्दिपट्टं भद्रासनं = आसनं, कल्पितम् न्यस्ता हेममयाः सदर्भ हेमम, सदर्भकुसुमाः तीर्थाम्बुपूर्णाः = संदर्भसुमन तीर्थाम्बुपूर्णाः घटाः, युक्तः = पूर्णाः, पुष्यरथश्च = पुष्परथच, मन्त्रिसहिताः पौराः समभ्यागताः। सर्वस्य = सर्वान्, हि = अपि, मङ्गलं = शुभपत स भगवान् वेद्यां वसिष्ठः स्थितः।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

भावार्थः = रामाभिषेकस्य इति छत्रं सत्यजनं सनान्दिपटहं भद्रासनं कल्पितं न्यस्ता हेममयाः स्वर्ण पुष्प रथ तीर्थाम्बुपूर्णाः घटाभिषेक पूर्णः पुष्परथच मान्त्रेण सह पौराः संभार्यां सर्वस्य आपि शुभ मङ्गलं भगवान् वेद्याँ करोति।

व्याकरण = पुष्परथश्च = पुष्प रथच
सर्वस्यास्य = सर्वस्य अस्य

छन्दः = अत्र शार्दूलविक्रीडितम् छन्दः वर्तते।
लक्षणम् = सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।

13. ~~आम्रकूटपर्वतस्य~~ यक्ष कथयति मेघं यत आम्रकूट पर्वतं परं त्वाम् त्वाम् परउपकारकृतः वशात् त्वाम् स निवास कुरुः तथा आम्र फल आगमन करोति।

2

समाप्त

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

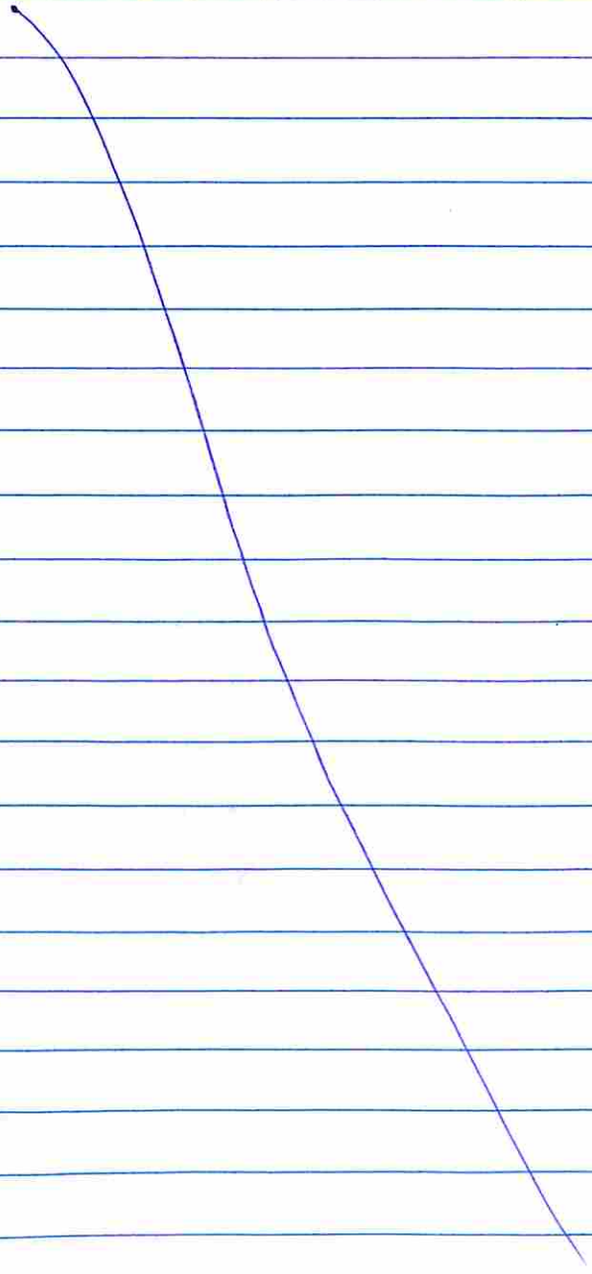

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

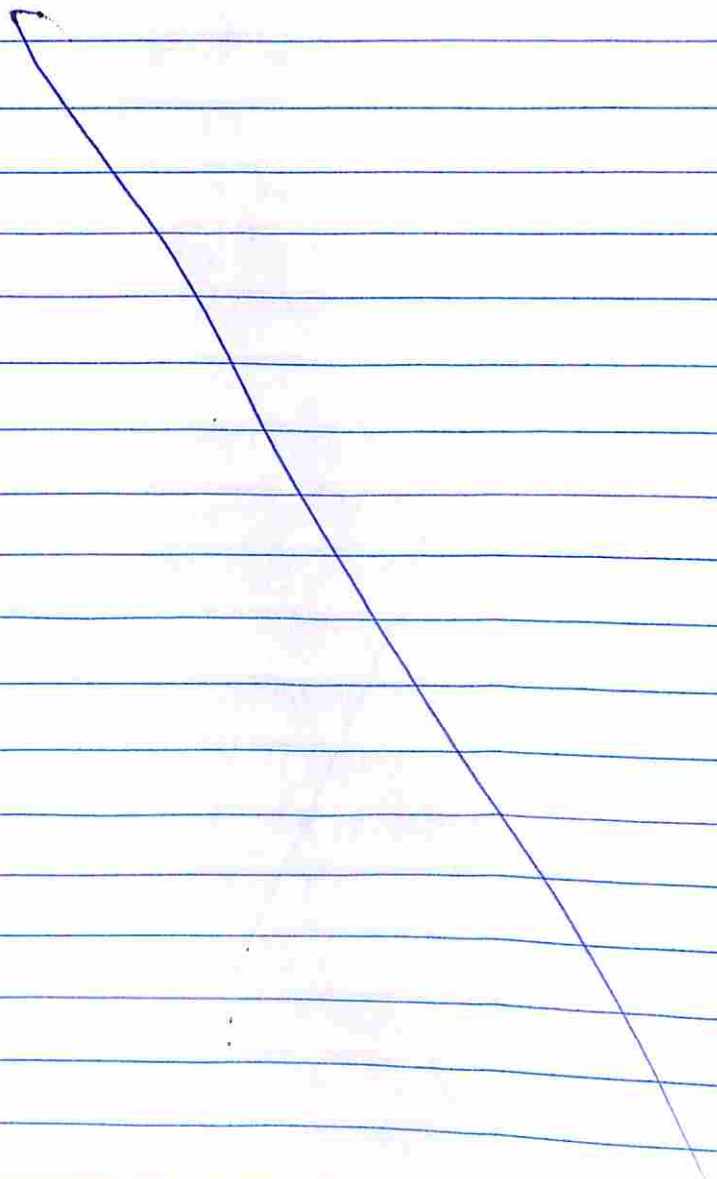

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

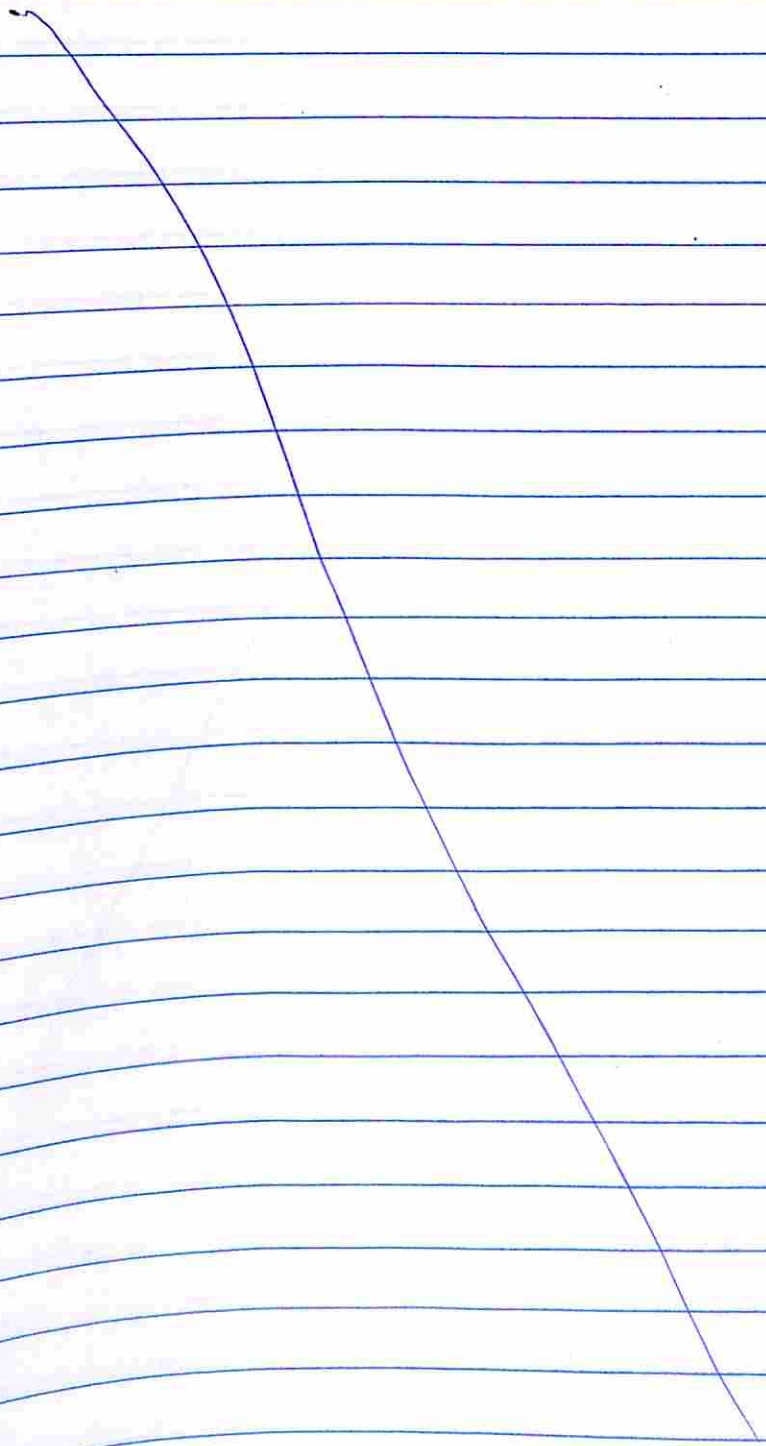

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSEB-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-166-2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

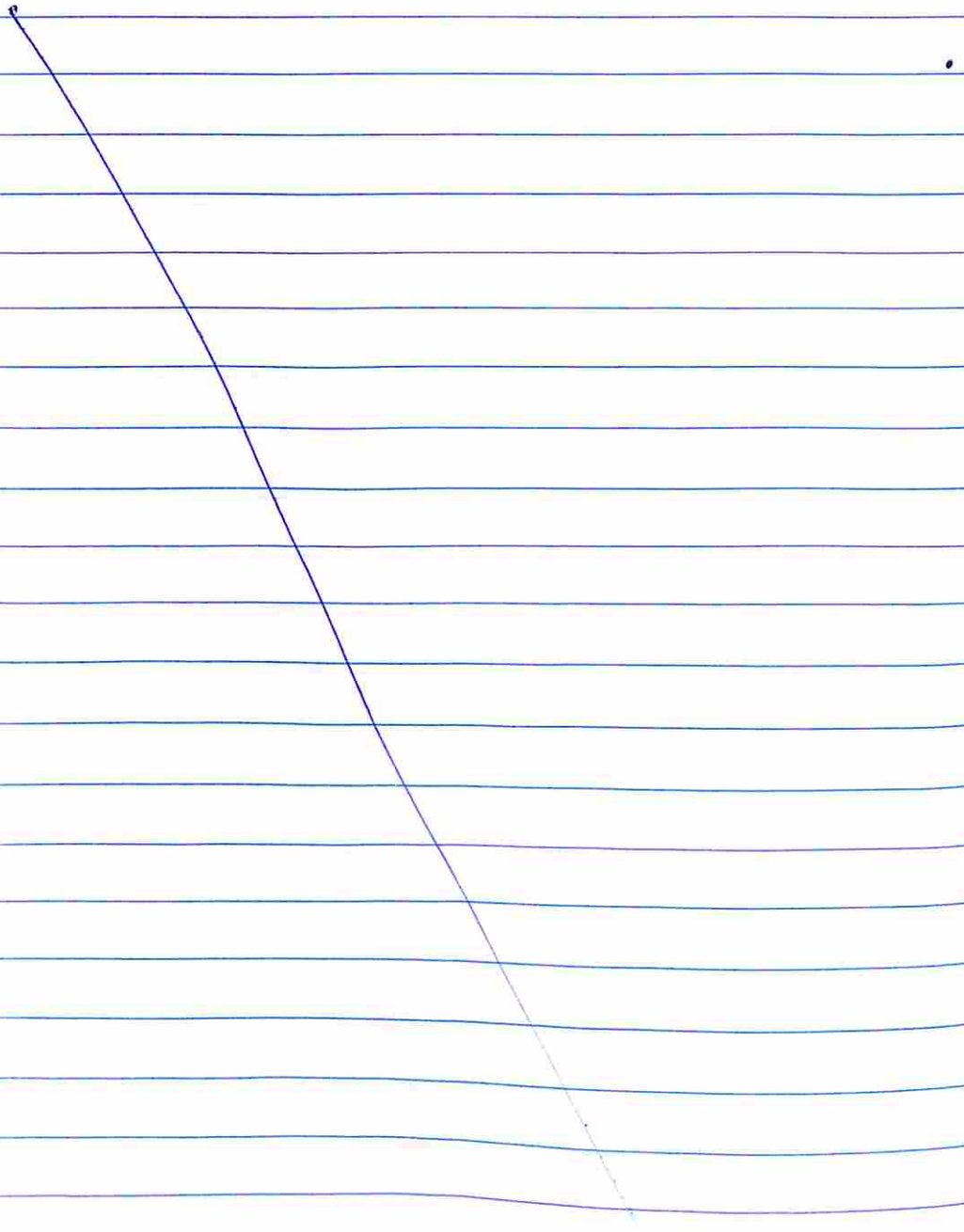

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक

BSER-166/2019

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

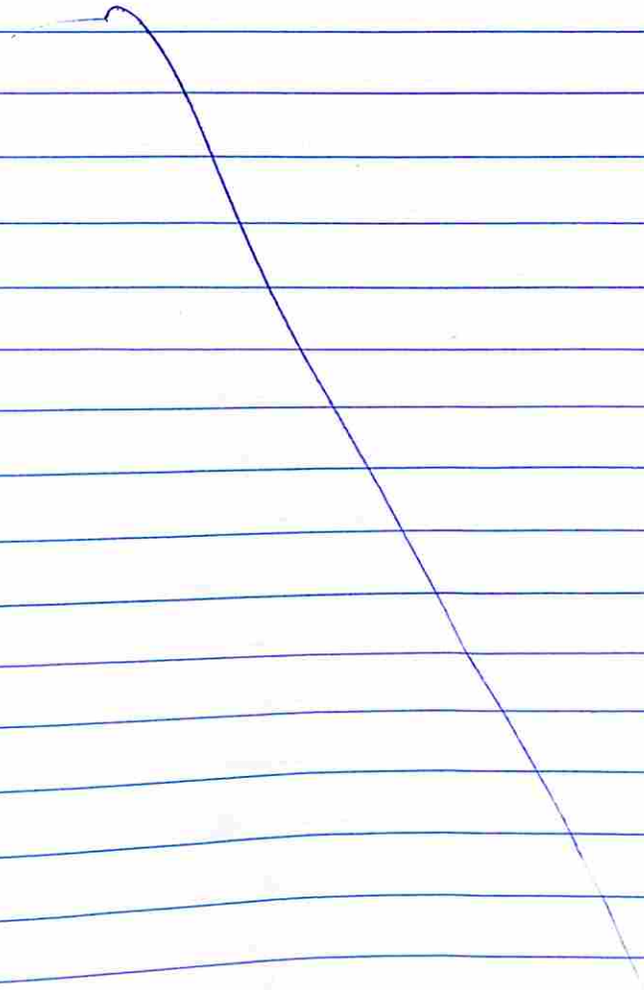

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER 16-2019

79 इन्चार्ज

27

P/U/03046

30/4/22